શ્રી શત્રુંજય – મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેકટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ – ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પરિચય द्वितीय वर्ष - अभ्यास - 5

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

Hindi Answersheet

(5)

એનરોલમેન્ટ નંબર ______ ગામ ______

વિદ્યાર્થીનું નામ ______

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	स्मृति अंतर्धान
(૨)	चार गति
(૩)	अप्टपटल
(૪)	भवभ्रमण
(૫)	संज्वलन
(૬)	अजितनाथ
(૭)	लोभ
(૮)	विधि
(૯)	व्यक्त स्वाभा
(૧૦)	अष्टप्रकारी
(૧૧)	कंचन
(૧૨)	अनंतानुबंधीमान
(૧૩)	सम्यकत्व
(૧૪)	कोल्लाग सन्निवेश
(૧૫)	उत्कृष्ट
(૧૬)	व्यक्त
(૧૭)	दीपक
(૧૮)	वज्रसंस्कार
(૧૯)	सुख की प्राप्ति
(૨૦)	दुप्पसह सूरि

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	लोभी
(૨)	नीच गोत्र कर्म
(૩)	महाविदेह क्षेत्रमें
(૪)	श्री सुधर्मास्वामी
(૫)	प्रत्याख्यानी
(૬)	निद्रा
(૭)	नेतर की सोटी
(૮)	आत्मा की उर्ध्वगति
(૯)	भारद्वाज
(૧૦)	श्री शांतिनाथ
(૧૧)	हल्दी के रंग जैसा।
(૧૨)	गोल प्याले जैसा
(૧૩)	नोकषाय
(૧૪)	रिकृपरिणाम
(૧૫)	देवकुरु क्षेत्र में
(૧૬)	कषाय
(૧૭)	लाभ / आमदनी
(૧૮)	नीच गोत्र
(૧૯)	पशुपनेको
(૨૦)	निरंतर

પ્રશ્ન-૨ (continued)

(૧૦)	एक वर्ष
(૧૧)	छोटे के सिंग
(૧૨)	बहुमान
(૧૩)	निर्लोभिता
(૧૪)	दोनों के प्रति
(૧૫)	नरक
(૧૬)	आक्रमण
(૧૭)	द्विप के मनुष्यों
(૧૮)	अयोग्य
(૧૯)	जिसके उदय से
(૨૦)	समाधी

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	प्रत्याख्यानी
(૨)	धारण करनेवाला।
(૩)	हमे / अपने
(૪)	सूर्य की किरण से

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	8	(૬)	3
(૨)	4	(૭)	1
(૩)	6	(૮)	5
(૪)	9	(૯)	10
(૫)	7	(૧૦)	2

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	16
(૨)	5
(૩)	99,000
(૪)	4 महिने / 120 दिन
(૫)	16
(૬)	12 वर्ष
(૭)	4
(૮)	18
(૯)	2
(૧૦)	4

પ્રશ્ન-૬ ✓ કે x		પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર	
(૧)	x	(૧)	20
(૨)	x	(૨)	7
(૩)	✓	(૩)	15
(૪)	x	(૪)	20
(૫)	✓	(૫)	5
(૬)	x	(૬)	14
(૭)	✓	(૭)	18
(૮)	✓	(૮)	24
(૯)	✓	(૯)	22
(૧૦)	x	(૧૦)	7

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	=	કુલ ગુણ

રીમાર્ક ______ તપાસનારની સહી ______

प्रश्न - ८ (1) मान के प्रकार - मान के ४ प्रकार हैं। (1) संज्वलन (2) प्रत्याख्यानी (3) [illegible]ख्यानी (4) अनंतानुबंधी (1) संज्वलन मान - यह मान बेंत जैसा है। जीस तरह बेंत सहजता से नम्र

१. जाती है, उसी तरह संज्वलन मान वाली व्यक्ती भी अल्प समझाने पर अपनी अक्कडता त्याग कर नम जाता है झुक जाता है। (2) अनंतानुबंधी मान - यह मान पत्थर के स्तंभ जैसा है। पत्थर के स्तंभ को झुका नहि सकते, उसी तरह अनंतानुबंधी मान कषाय वाले जीव मृत्यु के क्षण तक अभिमान को छोडते नहि। स्वयं टूट जाते है डुब जाते है पर अपनी अक्कडता छोडते नहि।

---

२. श्री अजितनाथ भगवान के गुण एवं गरिमा :- निर्मल चंद्र की कला से अधिक सौम्य गुणवाले, बादलों के अंधकार और के सुर्यकिरणों से अधिक तेजवाले, देवता के पति इंद्र के समुह से अधिक रूपवाले, पर्वतो में श्रेष्ठ ऐसे मेरु पर्वत से अधिक स्थिरता वाले, सत्व में निरंतर किसी से भी जीते गये। शरीर के बल में किसी से भी न जीते गये और तप संयम मे भी न जीते गये ऐसे अजितनाथ प्रं. की स्तुती करता हुं। सौम्यता के गुणों से नविन शरदऋतु के चंद्र भी उन्हे पा सकता नही। तेज के गुणों से नविन शरद ऋतु का सूर्य भी उन्हे पा सकता नहीं, रूप के गुणो से देवता के पति इंद्र भी उन्हे पा सकता नही और स्थिरता के गुणों से पर्वतो का पति मेरु पर्वत उन्हे पा सकता न ये गरिमा बताया है

३. सुधर्मास्वामी की शंका और वीरप्रभु द्वारा किया गया समाधान :- सुधर्मास्वामी के मनमे यह शंका थी की इस जन्म जैसे ही अगला जन्म होता है। जैसे मनुष्य मरकर मनुष्य ही होता है और पशु मरकर पशु ही होता है। देव मरकर देव और नारकी मरकर नारकी ऐसा वे मानते थे। पर जब उन्होने समवसरण मे जाकर श्री वीरप्रभु के पास अपनी शंका व्यक्त की तब प्रभु ने बताया की इस वेदपद का अर्थ है कोई मृदुता, सरलता आदि गुणों वाली आत्मा ही वापस मनुष्य जन्म को पाती है। कर्मानुसार मनुष्य या पशु भी नारकी, तिर्यंच, मनुष्य या देव पने उत्पन्न होते है। यानी जीव कर्मानुसार चारगति मे उत्पन्न होता है इस तरह सुधर्मास्वामी के शंका का समाधान हुआ।

४. वर्षधर पर्वत :- वर्ष यानि क्षेत्र और धर यानि धारण करनेवाला। दो क्षेत्रो के मध्यमे तनकर दोनो क्षेत्रो को अलग करते हुए पूर्व-पश्चिम रहे हुए है। यह लंब चोरस आकार के है। वर्षधर पर्वत ६ है। वो इस तरह

क्र	नाम	किसके बीच मे है	वर्ण	ऊंचाई	जमीन के अंदर	चौ
१	चुल्ल हिमवंत	भरतक्षेत्र और हिमवंत क्षेत्र	पीला सुवर्णमय	१०० योजन	२५ योजन	1052 12/19 यो
२	महा हिमवंत	हिमवंत और हरिवर्ष क्षेत्र	पीला सुवर्णमय	२०० योजन	५० योजन	4210 10/19 यो
३	निषध पर्वत	हरिवर्ष और महाविदेह क्षेत्र	लाल तपनीयमय	४०० योजन	१०० योजन	16842 2/19
४	नीलवंत पर्वत	महाविदेह और रम्यक क्षेत्र	हरे वर्ण का वैडूर्य रत्नमय	४०० योजन	१०० योजन	16842 2/19
५	रुक्मि पर्वत	रम्यक और हैरण्यवंत क्षेत्र	श्वेत वर्ण रजतमय	२०० योजन	५० योजन	4210 10/19
६	शिखरी पर्वत	हैरण्यवंत और ऐरावत क्षेत्र	पीला सुवर्णमय	१०० योजन	२५ योजन	1052 12/19 यो

५. क्षेत्रवृद्धी अतिचार :- जैसे पूर्व दिशा मे सौ मील जाने का प्रमाण किया हो और उस दिशा मे डेढसौ मील जाने का काम पडे तो तब दुसरी दक्षिण आदि दिशाओ के पचास मील उसमे जोड ले विचार करके दुसरे दिशा का काम करके इस दिशा में जोड दिया। इस प्रकार का कुविकल्प किया हो तो क्षेत्रवृद्धी अतिचार लगता है। (2) स्मृति अंतर्धान अतिचार - दिशाव्रत का प्रमाण करके भूल जाये की कौनसी दिशामे कितने दूर तक जाना है इस बारे में विस्मृत हो जाते है तो स्मृति अंतर्धान नामक अतिचार लगता है।